Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

हनुमान गढ़ व श्रीगंगानगर जिलों का कृषि पर आधारित औधोगिक विकास का अध्य्यन

Dr. Vijay Kumar[1]* Jagdish Chander[2]

[1] Geography Department (HOD) DAV College, Sri Ganganagar, Rajasthan

[2] Department of Geography, Mata Jeetoji Girls College, Suratgarh, Rajasthan

सार – *औद्योगिक दृष्टि से मरूस्थलीय प्रदेश पिछड़ा हुआ है। अधिकांशतः मध्यम श्रेणी के उद्योग एवं लघु उद्योग ही यहाँ विकसित हुए है। ऊन उद्योग, कालीन, नमदे, वस्त्रों की छपाई, रंगाई, जूतियाँ बनाना, कसीदाकारी आदि प्रमुख कुटीर उद्योग हैं। जोधपुर, बीकानेर, पाली, गंगानगर, हनुमानगढ़, में केन्द्रित है। मकराना संगमरमर उद्योग का केन्द्र है। सामान्यतया यह प्रदेश औद्योगिक दृष्टि से विकसित नहीं है किन्तु भविष्य में विकास की पर्याप्त सम्भावनाएं हैं।*

----------X----------

प्रस्तावना

हनुमानगढ जले में कृषि का सर्वाधिक विकास हुआ है। यही कारण है कि जिलों में कृषि आधारित उद्योगों का सर्वाधिक विकास हुआ है। गंगानगर जिले में जे.सी.टी. मील जगजीत काॅटन टेक्सटाइल स्थापित है, इसकी प्रथम इकाई की स्थापना वर्ष 1947 में की गई व उत्पादन वर्ष 1951 में प्रारम्भ किया गया। द्वितीय इकाई से उत्पादन वष्र 1996 से प्रारम्भ किया गया। इस मील में प्रतिमाह 15 लाख मीटर कपड़ा बनता है। पहले इस मील में केवल मोटा कपड़ा बनता था, किन्तु अब अच्छी किस्म का कपड़ा तैयार किया जाता है। जिसको देश के अन्य क्षेत्रों में निर्यात किया जाता है। इस मील में हजारों की संख्या में श्रमिक कार्यरत थे।

इस मील में राज्य सरकार के पांच प्रतिशत शेयर है। वर्तमान में इसका चुकन्दर प्लांट अत्यधिक लागत तथा कई राजनैतिक कारणों से बन्द कर दिया गया है। इस मील में गन्ने के रस को उबालने पर जो सीरा निकलता है उसे व्यर्थ न करके शराब बनाने के काम में लिया जाता है। जिससे यहाँ चीनी के साथ-साथ शराब उद्योग भी तेजी से विकसित हुआ है।

एस्टेट की स्थापना की गई जिसे रीको के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र में उद्योगों के लिए बिजली, पानी तथा गोदाम आदि की सुविधाएं प्रदान की गई हैं। इस एस्टेट में वर्तमान समय में खाद्य पदार्थ, बाल्टी, बिस्कुट, रबर की चप्पलें, कृषि के छोटे ओजार, कंटिले तार, पीतल के बर्तन, साबुन, चीनीमिट्टी के प्याले, पलंग, मेज, कुर्सी आदि बनाने की छोटी-छोटी क्ट्रियाँ लगाई गई है। इनको उद्योग विभाग द्वारा नियंत्रित मूल्य पर कच्चा माल उपलब्ध करवाया जाता है।

श्री गंगानगर की जलवायु बहुत गर्म है। गर्मी में तापमान 52° सेल्सियस पहुंच जाता है और शीतकालीन में -2° सेल्सियस के आसपास गिर जाता है। औसत वार्षिक वर्षा केवल 20 सेमी होती है। वर्षा की मात्रा, जलवायु तथा जलपूर्ति की दृष्टि से यह जनपद राजस्थान के रेतीले एवं शुष्क क्षेत्र में पड़ता है इस संपूर्ण क्षेत्र में जल का धरातलीय प्रवाह Surface run off नहीं के बराबर है। संपूर्ण जनपद बृहद बालुकामय मैदान है। एकमात्र नदी घग्गर है जिसका प्रवाह हनुमानगढ़ के पास ही रेत में समाप्तप्राय हो जाता है। जनवरी का अधिकतम ताप 20.70 सें. तथा निम्नतम 2.40 सें. रहता है। ग्रीष्म के जून महीने में अधिकतम ताप 43.0 सें. तक हो जाता है किंतु गंगानगर में 50.0 सें. तक की संभावना रहती है। जिले में औसत वार्षिक वर्षा 8.580 सें. होती है और वर्षा के कुल दिन 15.2 हैं। अधिकांश वर्षा (6.690 सें.) जून-जुलाई-अगस्त महीनों में हो जाती है। राजस्थान में सर्वाधिक रेत के तूफान गंगानगर जिले में ही आते हैं। ओले कभी-कभार, दशाब्दियों में एकाध बार, पड़ते हों।

जिले की रेतीली भूमि में जलपूर्ति करने पर उत्पादन शक्ति बहुत अधिक हो जाती है। घग्गर-घाटी की मटियार भूमि तथा

www.ignited.in

वर्षा ऋतु में भर जाने वाले तालाब तथा झीलों के तल में प्राप्य मटियार दोमट गेहूँ एवं चने की फसलों के लिए प्रसिद्ध हैं। न केवल भाखड़ा-नंगल-योजना के जल द्वारा (संभाव्य सिंचन क्षेत्र 7,70,000 एकड़), प्रत्युत हनुमानगढ़ से विकसित विशाल राजस्थान-नहर-परियोजना द्वारा, जो विश्व में अपने ढंग की सर्वाधिक लंबी नहर है, जनपद का सर्वांगीण विकास किया जा रहा है। जिले का गंग-नहर-उपनिवेशक्षेत्र भारत का सबसे कोरा क्षेत्र है जहां सर्वाधिक ट्रैक्टर प्रयुक्त हो रहे हैं। सिंचाई की वृद्धि के साथ कृषि के यांत्रिक साधनों का अधिक उपयोग होता जा रहा है। जनपद में स्थित सूरतगढ़ फार्म एशिया महादेश का वृहत्तम सुनियोजित 30,670 एकड़ का फार्म है जिसमें यांत्रिक कृषि होती है। यह कृषि क्षेत्र प्रयोगशाला सदृश है जिसमें शुष्क प्रदेश के उपयुक्त कृषि का विकास करने, समुन्नत बीज उत्पन्न करने, पशुओं की नस्लें समुन्नत करने आदि के प्रयोग किए जा रहे हैं। अत: जनपद की कृषिव्यवस्था जीविकायापन कृषि की स्थिति से निकलकर वाणिज्य कृषि की ओर तीव्र गति से अग्रसर हो रही है।

खाद्यान्नों के अतिरिक्त गन्ना एवं कपास का उत्पादन बढ़ रहा है। कृषि पदार्थों पर आधारित उद्योग.धंधे पनप रहे हैं। गंगानगर में चीनी का कारखाना तथा औद्योगिक संस्थान, हनुमानगढ़ में उर्वरक कारखाना, रायसिंहनगर में औद्योगिक, प्राविधक तथा शैक्षणिक संस्थान आदि जनपद की विकासशीलता के सूचक हैं। भाखड़ा-नंगल-योजना द्वारा जनपद के प्रमुख स्थानों को बिजली प्राप्त हो रही है।

हनुमान गढ़ व श्रीगंगानगर जिलों का कृषि पर आधारित औद्योगिक विकास

जिलों में लगभग 357.88 हजार हैक्टेयर खाद्यान के खेतों में सिंचाई की जाती थी। जो वष्र 2011 में कुल सिंचित क्षेत्र का 41.97 प्रतिशत तथा क्षेत्रफल लगभग 738 हजार हैक्टेयर खाद्यानुसल का मिलता है। अतः खाद्यान कीसुल में 380.12 हजार हैक्टेयर की उतरोत्तर पाई गई है। वहीं जिलों में गन्ना कीसुल में सिंचाई व क्षेत्रफल दोनों में भारी कमीं मिलती है। वर्ष 1975 में गन्ना कीसुल का सिंचित 1.19 प्रतिशत व क्षेत्रफल 8.44 हजार हैक्टेयर था। जो वर्ष 2011 में घटकर सिंचित क्षेत्र 0.14 प्रतिशत व क्षेत्रफल 2.52 हजार हैक्टेयर हो गया है।

वर्ष 1975 की तुलना में वष्र 2011 में कपास कीसुल में ही भारी कमीं मिलती है। वर्ष 1975 में कुल सिंचित क्षेत्रफल का 23.67 प्रतिशत कपास कीसुल का है जो जिलों में लगभग 186.82 हजार हेक्टेयर कपास के खेतों में सिंचाई की जाती थी। जो कि वष्र 2011 में घटकर सिंचित क्षेत्रफल 17.81 प्रतिशत व क्षेत्रफल उतरोत्तर के साथ 312.55 हजार हैक्टेयर हो गया। जिसमें की 141 हजार हैक्टेयर की पाई गयी है। अध्ययन क्षेत्र में 35 वर्षों में अन्युसलों में उतरोत्तर मिलती है। वर्ष 1975 में कुल सिंचित क्षेत्रफल का लगभग 24.26 प्रतिशत अन्युसलों का था तथा सिंचाई का क्षेत्रफल 171.66 हजार हैक्टेयर में था। जो वर्ष 2011 में मिलती है। क्षेत्र में वर्ष 1975 में 704.85 हजार हैक्टेयर में सिंचाई की जाती थी। जो वर्ष 2011 में 1755.88 हजार हो गया।

खाद्यानुसलों का सिंचित क्षेत्र 90 हजार हैक्टेयर से भी अधिक अति उच्च अनुपात में मिलता है। जिसका प्रमुख कारण क्षेत्र नाली बहाव में होने से मृदा अधिक आद्रताग्राही है। जिस कारण यहां अति उच्च खाद्यान का अनुपात पाया गया है।

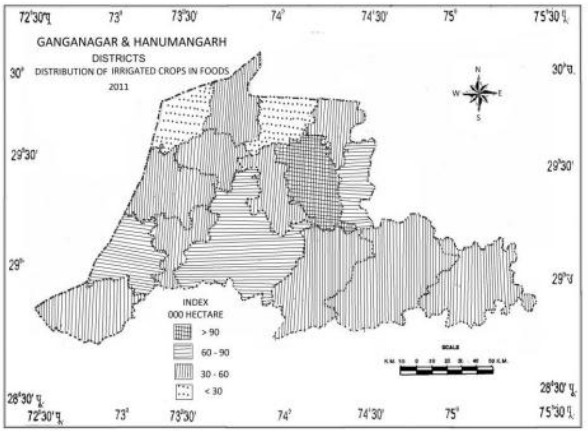

अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 1975 की तुलना में वर्ष 2011 में गन्ना कीुसल के अन्तर्गत सिंचित क्षेत्र में भारी कमीं मिलती है। जिसका प्रमुख कारण अन्युसलों का समावेश रहा है। क्षेत्र में करणपुर तहसील में गन्ना कीसुल का सिंचित क्षेत्र .60 हजार हैक्टेयर से भी अधिक उच्च अनुपात में मिलता है। वहीं गंगानगर तहसील में .30 से .60 हजार हैक्टेयर के बीच मध्यम अनुपात पाया गया है, जबकि क्षेत्र की 11 तहसीलों में 0.30 हजार हैक्टेयर से भी कम निम्न अनुपात में गन्ना कीसुलों का सिंचित क्षेत्र है।

उत्तर-पष्चिमी सिंचित क्षेत्र के अन्तर्गत राजस्थान राज्य के गंगानगर व हनुमानग जिले आते हैं। सामान्यतः मृदा गहरी से बहुत गहरी हैं जो गंग नहर, भाखड़ा नहर व इन्दिरा गांधी नहरी सिंचित क्षेत्र में आती है। हिमालय मूल के शिवालिक एल्यूवियम से मृदाओं का गठन हुआ है। एल्यूवियम का कणिका गठन भिन्नता वाली मुख्यतः दोमट बलुई से बलुई दोमट व पूर्ण निकास, निचली अधःस्तर कैल्षियमयुक्त कंकड़ तथा चूनायुक्त है। ये मृदाऐं उत्पादक हैं। मृदा गठन के वर्गीकरण के आधार पर इन मृदाओं को टोरीप्सामेन्ट वृहत में वर्गीकृत किया गया है।

www.ignited.in

इस परिस्थिति भाग की मुख्य खरीफुसलें कपास, ग्वार, दालें व रबीसुलें गेहूँ, चना तथा सरसों इत्यादि है। मृदा उर्वरता स्तर के अनुसार कार्बनिक पदार्थ कम तथा नत्रजन स्तर बहुत न्यून है। सुस्फोरस न्यून से मध्यम तथा पोटॉश तत्व मध्यम से अधिक स्तर की ओर है। गंगनहर के सिंचित क्षेत्र में जलस्तर नहर के नजदीक 10 मीटर से कम तथा नहर से दूर 10 मीटर तक स्थित है।

अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 1975 की तुलना में वर्ष 2011 में कुल सिंचितुसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल में उतरोत्तर वृद्धि पाई गई है। जिसका प्रमुख कारण सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, भू-उपयोग में वृद्धि, आधुनिक कृषि, व कृषि यन्त्र आदि का रहा है। क्षेत्र में जैसे-जैसे सिंचाई सुविधाओं में विस्तार हुआ वैसे-वैसे भू-उपयोग में भी वृद्धि होती गई। परिणामस्वरूप जिलों में विभिन्नुसलों का उत्पादन लिया जाने लगा।

राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल ने जिले में तापीय विद्युत परियोजना व जल विद्युत परियोजना का निर्माण कर ओद्योगिक विकास में नया आयाम दिया है।

हनुमानग में पंजीकृत उद्योगों के अतिरक्त अन्य छोटे उद्योग भी भारी मात्रा में है। जिसका प्रमुख कारण दोनों जिलों में कृषि का है, क्योंकि जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में आजीवीका का मुख्य स्त्रोत कृषि है। प्रमुख ग्रामीण उद्योगों में चर्म उद्योग, तेल उद्योग, लुहार, सुथारी, चुना (कली), गुड़ खांडसारी, कुम्हारी, रेषा, अखाद्य तेल, साबुन, अनाज, दाल, बांस, बेंत, हाथ कागज उद्योग, ताड़ गुड़ल प्रसंस्करण माचिस, अगरबत्ती, पटाका, सेवा ईकाई, पीतल तांबा, एल्यूमिनियम, टैक्सटाईल, लाख चुड़ी, प्लास्टिक, मोमबत्ती, इलेक्ट्रोनिक्स, दुग्ध आधारित उद्योग (डेयरी), पशु आहार, वन औषधि, मधुमक्खी पालन आदि प्रमुख ग्रामीण उद्योग हे।

तापीय परियोजना से 1250 तथा लघु जल परियोजना से 4 मेगावाट विद्युत उत्पादन हो रहा है। साथ ही जिले के पदमपुर कस्बे के पास कचरा आधारित विद्युत परियोजना कल्पत: स्थापित की गई है। जिसकी उत्पादन क्षमता 7.8 मेगावाट है।

उद्योग

जिले में राजस्थान खान व खनिज, निगम लिमिटेड का जिप्सम प्लांट रावला में स्थित है। जो कि अत्याधुनिक, उपकरणों द्वारा स्वचालित संयंत्र है। इसकी स्थापना 2003 में हुई थी।

इन खानों से लगभग 90 लाख मैट्रिक टन जिप्सम प्रति वर्ष निकाला जाता है। यहां के स्वचालित जिप्सम प्लांट से 60 मैस से साईज पाउडर 50 किलो के एच.डी.पी.ई. थैलों में भरकर तैयार किया जाता है, जो कि भूमि सुधार के लिए राजस्थान, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र राज्यों में भेजा जाता है।

प्राकृतिक स्थिति प्रतिकूल होते हुए भी यहां सड़कों तथा रेलमार्गों का निरन्तर विकास हो रहा है, जिलों में सड़कों की कुल लम्बाई 598761.56 किलोमीटर है। यहां से कई राजमार्ग तथा एक राष्ट्रीय राजमार्ग भी गुजरता है। जिसमें राज्य राजमार्ग संख्या 3 (179) किलोमीटर राज्य राजमार्ग 7 बी 81 किलोमीटर राज्य राजमार्ग संख्या 16 (33) किलोमीटर व राष्ट्रीय राजमार्ग 15 भी गुजरता है। जिसकी लम्बाई 136 किलोमीटर है। इसके अलावा यहां से ब्रोडगेज, तथा मीटर गेज रेल सेवाएं भी विकसित की गई हैं।

निष्कर्ष

कृषि की भूमि उपयोग प्रणाली और कृषि की तकनीक परस्पर संबंधित होते हैं। किसी भी क्षेत्र में निवासित जनसंख्या ही उसका वास्तविक धन है। यही जनसंख्या उस प्रदेश या क्षेत्र के संसाधनों का उपभोग करती है, और उसकी नीतियों निर्धारण करती है, अतः उस प्रदेश या क्षेत्र की पहचान उसके निवासित लोगों से ही होती हे।

अध्ययन क्षेत्र में नहरी सिंचाई के प्रादुभ्रव से पहले विरल जनसंख्या होने के कारण बहुत कम भू-भाग पर कृषि ही की जाती थी, यहाँ वर्षा आधारित सीमितुसलों की जीवन निर्वाह कृषि की जाती थी। परन्तु नहरी परियोजनाओं के आगमन से इस भू भाग को जल उपलब्ध हुआ, जल उपलब्धता के साथ-साथ कृषि में व्यापारीकरण की प्रवृतियों से यहां भूमि उपयोग प्रतिरूप व जनसंख्या में अत्यधिक बदलाव आया है।

संदर्भ सूची

भूमि संसाधन विभाग, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार

राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो

Land Use Plannning भारत में भूमि उपयोग नियोजन का पोर्टल

Land Use Policy नामक जर्नल

भारत की भूमि उपयोग नीति (2013) पूरा ड्राफ्ट

नियोजन विभाग, राजस्थान सरकार

Corresponding Author

Dr. Vijay Kumar*

Geography Department (HOD) DAV College, Sri Ganganagar, Rajasthan